नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

ग्रामीण सामुदायिक सहभाग पर संकाय विकास कार्यक्रम का उदघाटन

स्वयंपूर्ण ग्राम के लिए सशक्तिकरण आवश्यक – प्रो. गिरीश्वर मिश्र

हिंदी विश्वविद्यालय में ग्राम विकास पर सात दिवसीय कार्यक्रम

वर्धा, 12 फरवरी 2019: महात्मा गांधी की स्वयंपूर्ण एवं स्वावलंबी ग्राम के लिए गावों का सशक्तिकरण आवश्यक है। गांव के विकास में वहां के समुदाय को शामिल कर बदलाव लाया जा सकता है। ग्राम सशक्तिकरण की दिशा में संवेदना के साथ अध्ययन जरुरी है। उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने व्यक्त किये। वे विश्वविद्यालय के महात्मा गांधी फ्यूजी

गुरुजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र एवं शिक्षा विभाग तथा महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद, हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में ग्रामीण सामुदायिक सहभाग विषय पर संकाय विकास कार्यक्रम के उदघाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे। 12 से 18 फरवरी तक चलने वाले इस कार्यक्रम में देश भर से 40 से अधिक संकाय सदस्य सहभागी हुए है। कार्यक्रम का उदघाटन दीपप्रज्ज्वलन के साथ अकादमिक भवन के कस्तुरबा सभागार में मंगलवार को किया गया। इस अवसर पर मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृपा शंकर चौबे, शिक्षा विभाग के अध्यक्ष डॉ. गोपाल ठाकुर, डॉ. शिरीष पाल सिंह, मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन डॉ. मिथिलेश कुमार ने किया। स्वागत वक्तव्य प्रो. कृपा शंकर चौबे ने दिया।

कुलपति प्रो. मिश्र ने कहा कि गांव हमारे आदर्श जीवन की संकल्पना है। हाल के वर्षों में गांव और शहरों में असंतुलन पैदा हुआ है। पंचायती राज व्यवस्था आने से गांवों के विकास को गति जरुरी मिली है

परंतु शिक्षा, स्वास्थ्य और पानी जैसी समस्या का निदान अभी भी नहीं हो पा रहा है। लोगों का शहरों की ओर पलायन बढ़ गया है जिससे शहरों पर अतिरिक्त दबाव बनता जा रहा है। हमें सोचना होगा कि गांव के विकास के लिए क्या करना आवश्यक है। वहां उपलब्ध अवसरों की खोज कर रोजग़ार के नए साधनों की खोज होनी चाहिए और जीवन के संचालन में गांव के हर नागरिक की सहभागिता सुनिश्चित करनी चाहिए ताकि वहां से शहरों की ओर विस्थापन को रोका जाए। हमारे गांव हमें संस्कार और जीवन जीने की सीख देते

हैं। हमें उनके प्रति आदरभाव विकसित कर उनके साथ संवाद बनाए रखना होगा। उन्होंने कहा कि हाल के दिनों में उत्पन्न हुई समस्याओं का जवाब हमें गावों से ही मिल सकता है। इस अवसर पर डॉ. गोपाल ठाकुर ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में अलग-अलग विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

<u>गांव के विकास पर होगी चर्चा</u>

सात दिनों तक चलने वाले इस कार्यक्रम के अंतर्गत गावों को केंद्रीत रखकर विषयों पर चर्चाएं होगी। जिसमें सामुदायिक लक्ष्यों का निर्धारण, गांधी जी एवं नई तालिम, आधुनिक भारत में गावों का बदलता परिदृश्य, सामुदायिक सहभागिता की पद्धतियां और साधन, सहभागी शिक्षण और सामाजिक आकलन, ग्राम आपदा प्रबंधन, ग्राम विकास नियोजन, मूलभूत ग्रामीण उद्योजकता, ग्रामीण वित्त, सामुदायिक सहभागिता में तकनीकी की भूमिका, सामुदायिक सहभागिता के उत्कृष्ट उदाहरण : शिक्षकों का दायित्व, सामुदायिक सहभागिता के लिए पारंपरिक एवं ठोस दृष्टिकोण, सामाजिक बदलाव, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के लिए ग्राम सहभागिता हेतु नियोजन, पुनर्वास – भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक पहलू आदि विषयों पर विषय विशेषज्ञ विचार रखेंगे। इसमें डॉ. डी. एन. दास, हैदराबाद, प्रो. टी करुणाकरण, वर्धा, प्रो. आनंद प्रकाश, दिल्ली, डॉ. गीता ठाकुर,पुणे, डॉ. जॉन मेन्नाचेरी, नागपुर, प्रो. पी. एन. सिंह, भागलपुर, डॉ. पी. एस. श्रीदेवी, तमिलनाडु, प्रो. वी. सुधाकर, हैदराबाद, प्रो.प्रदीप देशमुख, डॉ. उल्हास जाजू, वर्धा, श्री शरद बेहार, बिलासपुर आदि विषय विशेषज्ञ होंगे। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा उन्नत भारत योजना के अंतर्गत गोद लिए गये गांवों का भ्रमण भी किया जाएगा।